International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 1; January 2018; Page No. 20-23

सामाजिक विकास में सोशल मीडिया की भूमिका : एक अध्ययन

[1] राहुल कुशवाहा, [2] डॉ. सुषमा गॉधी
[1] सहायक प्रोफेसर, मल्टीमीडिया तकनीकी, शोधार्थी इलेक्ट्रानिक मीडिया
[2] शोध पर्यवेक्षक, प्रोफेसर - रिसर्च एण्ड पब्लिक रिलेशन, एमिटी विश्वविद्यालय, पॅचगॉव, गुड़गॉव

सारांश
सोशल मीडिया वर्तमान समय समाज में सबसे लोकप्रिय सूचनाओं के व्यापक संचार माध्यम बन गया है। जिसके फलस्वरूप पूरे दुनिया के सामाजिक स्तर, संस्कृति, विस्तार और विकास पर अलग किश्म का बदलाव दिखाई दे रहा है। सोशल मीडिया से सम्बंधित सामाजिक वेबसाइटें लम्बें समय से बिछड़े दोस्तों और नाते-रिश्तेदारों से पुनः सम्बन्ध स्थापित कराने के साथ ही रोज नये दोस्त बनाने, रोजाना नये सृजित विचारों को निकट संबंधियों से साझा करने से लेकर व्यापार विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में पढ़नें वाले छात्र अपनी शैक्षिक दक्षता और संचार कौशल में सुधार करने के लिये सोशल माध्यमों के द्वारा अपने सहपाठियों और शिक्षकों से सहयोग ले रहे हैं। आज ज्यादातर बेरोजगार युवा अपने कैरियर और व्यापार के सिलसिले में अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर तलाश हेतु लिंकडिन जैसी सोशल वेबसाइटों का प्रयोग करते हैं। राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय प्राकृतिक आपदाओं के समय में आपदा प्रबंधन के लोग और स्वयंसेवी संस्थाओं के लोग सोशल मीडिया का उपयोग कर ज्यादा से ज्यादा स्वयंसेवकों को अपने राहत अभियान से जोड़ते हैं जिससे प्रभावित क्षेत्रों में राहतकार्य जरूरतमंदों तक आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। सोशल मीडिया के प्रभाव से राजनीति और राजनीतिज्ञ भी अछूते नहीं रह गये हैं। अमेरिका, भारत, मिस्र, ईरान समेत दुनिया के कई आम चुनावों में सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। दुनिया के तमाम राजनीतिज्ञों ने रैलियों के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी अपनी धमाकेदार उपस्थिति दर्ज कराई है। अब तक किये गये अध्ययनों से यह महसूस हो रहा है कि सोशल मीडिया समाज की तस्वीर को बदलने में एक सक्षम माध्यम साबित हो सकता है।

मूल शब्द : सोशल मीडिया, सामाजिक विकास, इंटरनेट, शिक्षा।

प्रस्तावना
सामाजिक मीडिया के उपयोग से दो व्यक्तियों के बीच होने वाले संवाद का स्वरुप बदल गया है। इस माध्यम का उपयोग समाज के बुद्धिजीवी वर्ग के साथ आम जनता भी अपने से संबंधित चित्र व चलचित्र, स्थानीय सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिये कर रहें हैं। आज के भागम-भाग की जिन्दगी के माहौल में सामाजिक माध्यम सरकार, विभिन्न सरकारी / गैर सरकारी संगठनों, वाणिज्यिक संगठनों सहित व्यक्ति विशेष लोगों को एक साथ बड़ी संख्या में लोगों के साथ संपर्क बनाने का अवसर प्रदान करते हैं। स्कूलों की छुट्टियों, सामूहिक कार्यक्रमों के आयोजन, समाज के लिये निर्धारित सरकारी नीतियों की जानकारियॉ सामाजिक माध्यमों के जरिये लोगों तक आसानी से उपलब्ध हो रही हैं। ट्विटर, ब्लॉग्स द्वारा अपने विचारों को साझा करना सामाजिक मीडिया की एक बड़ी उपलब्धि है।
विक्किपीडिया के अनुसार, ''सामाजिक मीडिया मनुष्य के बीच सूचनाओं को साझा करने और चर्चा कर जानकारी एकत्रित करने के लिये मुख्य रूप से इंटरनेट पर आधारित उपकरण है।
इसी प्रकार से सामाजिक माध्यमों को परिभाषित करते हुये एक्सल कहतें है कि, ''सामाजिक मीडिया व्यक्तियों की सूचना और संचार जरूरतों को तेज करने और व्यवसायों की मदद करने के लिये उपलब्ध उपकरण और ऑनलाइन माध्यम है।

सोशल मीडिया : एक नजर
दूर दराज बसने वाले मित्रों व रिश्तेदारों के साथ वार्तालाप मनुष्यों के लिये एक बहुत ही चिन्तनीय विषय होता था। आपसी रिश्तों की मजबूती व सामंजस्य बनाये रखने के लिये परस्पर व्यवथित संचार का होना अति आवश्यक था। सचल दूरभाष यंत्र के विकास के बाद तकनीकी आधारित विभिन्न सामाजिक माध्यमों ने इन तमाम मुसीबतों के लिये एक सुलभ व्यवथित व तीव्रमान संसाधन के रूप में समाज को अतिविशिष्ट तोहफा भेंट किया। इन सामाजिक माध्यमों के जरिये पारिवारिक व सामाजिक स्तर पर हुये ऐतिहासिक विकास और बदलाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। रिश्तों की छिन्न-भिन्न हुई चरमराती डोर को एक सूत्र में पिरोने का कार्य सोशल मीडिया की उपलब्धियों में से एक है।
सामाजिक माध्यमों के रूप में डाक सेवा के जरिये पत्राचार लोकप्रिय तो थी लेकिन अपनी धीमी गति के कारण सूचनाओं के आदान-प्रदान में तत्परता का अभाव था। इस समय में टेलीग्रॉफ के अविष्कार को संचार के क्षेत्र में क्रांति के रूप में माना गया। संचार के इस माध्यम से सूचनायें कम से कम समय में अपेक्षाकृत ज्यादा दूरी तय करती थी। टेलीफोन और रेडियो ने संचार के क्षेत्र में धूम मचाने के अलावा तकनीकी विकास को सामाजिक विकास का श्रेष्ठतम माध्यम बना दिया। पलक झपकते ही सूचनाओं को महानतम दूरियों तक पहुॅचाना अब एक खेल जैसा प्रतीत होने लगा। उच्च स्तर के कम्प्यूटरों के विकास, इंटरनेट तकनीकी के साथ ई-मेल के जरिये सूचनाओं का आदान-प्रदान अब क्षणिक समय में संभव हो गया। नेटवर्किंग प्राद्यौगिकी में सुधार के साथ ही ''यूजनैट' जैसी तकनीकी नें अपने उपयोगकर्ताओं को एक आभासी समाचार के माध्यम से संवाद की अनुमति प्रदान की।
बीसवीं सदी में प्राद्यौगिकी विकास की गति बढ़ने के साथ हर घर में

कम्प्यूटर की पहुॅच काफी हद तक बढ़ गयी जिससे सामाजिक मीडिया और भी ज्यादा परिष्कृत हुई। समाज में सोशल मीडिया के रूप मे सनसनी पैदा करने वाली 1999 सन् मे विकसित पहली ब्लागिंग बेबसाइट आज भी काफी लोकप्रिय है । 2000 के दशक में माइस्पेस, लिक्डइन की बेबसाइटें सोशल मीडिया के परिष्कृत रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। चित्र और चलचित्रों को परस्पर एक दूसरे से साझा करने और संवाद स्थापित करने के लिये सन् 2005 में फ्लिकर, यूट्यूब जैसी सामाजिक माध्यम की साइटें विकसित हुईं। सन् 2006 तक फेसबुक, ट्विटर सोशल माध्यम के उपयोगकर्ताओं के लिये और अधिक विकसित तकनीकी के साथ इंटरनेट पर उपलब्ध हो गया।

वर्तमान समय में यह कहना मुमकिन नहीं होगा कि व्हाट्सप, लिंक्डइन, फेसबुक और ट्विटर जैसी बेबसाइटें सामाजिक मीडिया के सदियो के प्रयोगों के परिणाम हैं। इनके माध्यम से समाज या समाज के लोग तात्कालिक सूचनाओं के आदान-प्रदान से तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा अपने और अपने समाज के विकास की आधारशिला बखूबी से रख सकते हैं।

सोशल मीडिया के विभिन्न सामाजिक पहलू

1960 के दशक में ''वैश्विक गॉव' की कल्पना करते हुये मार्शल मैक्लुहान ने सोचा भी नहीं होगा कि दुनिया के लोगों को जोड़ने के लिये फेसबुक, ट्विटर और यूट्यूब जैसी सामाजिक बेबसाइटों की उत्पत्ति भी संभव होगी। शिक्षा के क्षेत्र में लोगों के नये विचारों को सदैव ही अहमीयत दी गयी है। सोशल मीडिया के माध्यम से शिक्षक और शिक्षार्थी हर रोज अध्ययन अध्यापन से सम्बधिंत विशिष्ट तरीकों से अवगत हो रहे हैं जिससे हमारी शिक्षा व्यवस्था में दिन प्रतिदिन सुधार नजर आ रहा है।

स्कूल स्तरीय छात्रों को फेसबुक और व्हाट्सप जैसे सामाजिक माध्यम उन्हें उनके आस पास की सामूहिक गतिविधियों से जोड़ कर रखे हुये हैं। क्लासरूम की गतिविधियों से लेकर उनको मिलने वाले दैनिक गृहकार्यों के आपसी सहयोग हल करने, कठिन से कठिन समस्यों के सहपाठियों की मदद से समाधान निकालने में सामाजिक माध्यमों की भूमिका सराहनीय हो रही है। विज्ञान, गणित के कठिन सवालों, भ्रामिक तथ्यों को समझने के लिये चौबीस घण्टे छात्र इन सामाजिक माध्यमों पर उपलब्ध अपने शिक्षकों के साथ सहपाठियों से चर्चा करते है। परिणामस्वरूप छात्रों के मन के अन्दर की हिचकिचाहट धीरे धीरे अपने आप ही समाप्त हो रही है। सामाजिक विज्ञान की पहेलियों व इतिहास भी आज इनके जुबान पर है उसका कारण है कि छात्र वर्ग सदैव ही जाने-अनजाने में सामाजिक पहलुओं पर चर्चा इन माध्यमो के जरिये करते रहते हैं।

समाज का लगभग हर तबका आज मोबाईल से जुड़ा हुआ है जिसके कारण उनका भिन्न भिन्न स्थानों के भिन्न भिन्न तरह के लोगों से संवाद स्थापित हो रहा है जिससे पूरे समाज का संप्रेषण कौशल विकसित हो रहा है। कमोवेश स्कूलीय छात्रों की यह सारी व्यवस्थायें कालेज स्तरीय व विश्वविद्यालय स्तर पर और ही विकसित रूप प्रयोग की जा रही हैं।

दसवीं, बारहवीं क्लास के छात्र/छात्रायें अब रोजगार के बारे में काफी आस्वश्त नजर आ रहें हैं जहॉ शहरी क्षेत्रों में व्यवसायिक पाठ्यकमों के बाद रोजगार की मांग को देखते हुये ग्रामीण इलाको के छात्र वर्ग अब अपने आप को व्यक्तिगत शिक्षा से व्यवसायिक शिक्षा पर ज्यादा ध्यान केंद्रित कर रहें हैं। और यह बदलाव ही समाज के विकास की कड़ी के रूप में नजर आ रहा है।

उद्योग जगत आज अपने उत्पादों को वास्तविक रूप में लाने के पहले से ही इसके प्रचार व प्रसार की व्यवस्था करते हैं। उत्पादों की गुणवत्ता और उसकी महत्ता को तरह तरह के विज्ञापनों के माध्यम से लोगों तक पहुॅचाने की रणनीति को सोशल मीडिया के द्वारा साकार किया जाता है। प्रबंधकों द्वारा सुनियाजित तरीके से फेसबुक, व्हाट्सप, यूट्यूब जैसी सोशल मीडिया का उपयोग कर ग्राहकों से उत्पादों के अच्छाइयों और कमियों के बारे में व्यक्तिगत राय भी एकत्रित किये जाते हैं। उपभोक्ता भी इन उत्पादों की गुणवत्ता से समझौता करने के बजाय उनके बारे खुलकर अपनी राय सामाजिक माध्यमों द्वारा उत्पादकों तक पहुॅचाते हैं । वर्तमान समय में बैंकिंग क्षेत्र भी अपनी सेवाओं को आम लोगों तक पहुॅचाने में अनेक सामाजिक माध्यमों का सहयोग ले रहे हैं। मोबाईल द्वारा पैसों के लेन-देन से लेकर बैंक खाता से सम्बंधित सभी जानकारियॉ आज हम गैर बैंकिंग समय में भी आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। जिससे इन कार्यों में व्यक्तिगत समय की बचत और सभी प्रकार से ये सेवायें आरामदायक हो गयी हैं।

सामाजिक विकास की कल्पना राजनैतिक हस्तक्षेप के बगैर असम्भव है। जिस समाज का नेतृत्व मजबूत हाथों में नहीं है वह समाज अब भी पिछड़ेपन का दंश झेल रहा है। परिवार वाद, धर्म, जातिवाद और क्षेत्रवाद से उपर उठकर विकासवाद का नारा देने वाला समाज ही आज विकास की ओर अग्रसर है। सोशल मीडिया के जरिये नेतृत्व-कर्ताओं और लोगों में परस्पर संवाद बना हुआ है। हर एक राजनेता सुदूर इलाकों में रहने वाले अपने समर्थकों से सामाजिक माध्यमों के द्वारा जुड़ा हुआ रहता है और समाज में होने वाली गतिविधियों पर अपनी पैनी नजर लगाये रहता है। ठीक इसी प्रकार समाज के बशिदें भी अपने नेतृत्व की अनुपस्थिति में सोशल मीडिया द्वारा साये की तरह पीछे लगा रहता है। 2000 के दशक से शुरू हुये इन संचार माध्यमों की लोकतांत्रिक भागीदारी में व्यापक प्रभाव महसूस हो रहा है। भारत, अमेरिका, इरान, मिश्र के साथ अनेकों लोकतांत्रिक देशों में सरकार के चयन प्रक्रिया में भी सामाजिक माध्यमों की भूमिका सराहनीय रही है। चुनावों में चुनाव प्रचार के लिये उपयोग होने वाली उपकरणों मे सामाजिक माध्यमों का विशेष महत्व बन गया है। सोशल मीडिया भारत में संवाद का एक नया रूप है जो दुनिया में कहीं भी, कभी भी बातचीत करने के लिये एक द्रुतगामी मंच प्रदान करता है।

आनलाइन चुनाव प्रचार का सबसे बड़ा उदाहरण अमेरिका में बराक ओबामा और भारत में नरेन्द्र मोदी के हाल ही में हुये चुनावों में देखा गया। इन दोनों ही नेताओं ने बहुत प्रभावी ढ़ंग से आनलाइन सामाजिक माध्यमों का इस्तेमाल किया और भारी बहुमत से चुनावों में विजय प्राप्त किया। सोशल मीडिया लोगों को अपनी राय, अपनी आवाज और अपने विचारों को साझा करने की अनुमति प्रदान करता है। सरकारी सांसदों और उनके तटस्थ कर्मी नीति निर्माण और उनके व्यवस्थित संचालन के लिये सामाजिक माध्यमों द्वारा समय समय पर आम लोगों से सलाह मशविरा प्राप्त करते रहतें हैं।

विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति भी अब किसी के लिये अछूती नहीं रह गयी है। स्थानीय महत्व के कला और संस्कृति, सामाजिक माध्यमों के प्रभाव से अन्य क्षेत्रों में भी लोकप्रिय हो रही हैं । इस प्रकार स्थानीय कलाकारों की मांग भी वैश्विक स्तर पर बढ़ रही है।

शोध परिकल्पना

सोशल मीडिया के प्रभाव से सामाजिक विकास की गति में वृद्धि हो रही है। शिक्षा के क्षेत्र में सोशल मीडिया उत्प्रेरक का कार्य कर रही है। दूरवर्ती क्षेत्रों में सोशल माध्यमों के विस्तार की आवश्यकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

अनुसंधान प्रस्ताव

सामाजिक बदलाव में सोशल मीडिया की उपयोगिता पर उठते सवालों पर इस अध्ययन का महत्व बढ़ गया है। समाज के विभिन्न पहलुओं के सोशल मीडिया के माध्यम से विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ है। हम इसके नकारात्मक पहलुओं को यदि थोड़े समय के लिये नजरअंदाज करे तो यह देखने को मिलता है कि वर्तमान समय में उपलब्ध सोशल मीडिया के विभिन्न रूप समाज को एक विकास की राह पर तीव्र गति से ढ़केल रहे हैं।

नमूने की विधि

अध्ययन हेतु लिये गये नमूने का आकार 150 है जिसे दो तरह की श्रेणियों में बांटा गया है। 20-25 वर्ष की आयु वर्ग के 75 छात्रों का समूह हैं जिन्हें विभिन्न कालेज और विश्वविद्यालयों से चयनित किया गया है जो सोशल मीडिया साइटों के सदस्य हैं। और दूसरा 40-50 वर्ष आयु वर्ग के 75 अभिभावकों का समूह है जिन्हें अनेक शहरी/ग्रामीण इलाकों से चयनित किया गया है। जो कि आंशिक या पूर्ण रूप से सोशल मीडिया साइटों के सदस्य हैं।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन सर्वे द्वारा किया गया है। सामाजिक माध्यमों का उपयोग करने वाले 20-25 वर्ष आयु वर्ग के विद्यार्थियो का विभिन्न कालेजो से रैन्डमली चयन किया गया है। इसी प्रकार से विभिन्न शहरी/ग्रामीण इलाकों से बुद्धिजीवी वर्ग/अभिभावकों जिनकी आयु 40-50 वर्ष के बीच है, रैन्डमली चयनित किये गये हैं। ये सभी उत्तरदाता सोशल मीडिया बेबसाइटों के नियमित उपयोगकर्ता हैं। इस तरह के नमूना चयन करने का मुख्य कारण निम्नवत् हैं-

- कालेजो में अध्ययन करने वाले छात्र सामाजिक पहलुओं पर ध्यान देते हैं।
- छात्र सामाजिक विकास के समर्थक होते हैं।
- अभिभावक और बुद्धिजीवी वर्ग समाज के मार्गदर्शक होते हैं।
- ये दोनों ही सामाजिक हितों के पक्ष में सकारात्मक रूख रखते हैं।

यह सर्वेक्षण प्रश्नोत्तर को दिये गये समूह में वितरित कर प्रत्यक्ष रूप से विवरण एकत्रित किया गया है। प्रश्नोत्तर में सामाजिक विकास के संबंध में सोशल मीडिया के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हो रहे प्रभावों से संबंधित प्रश्नों पर बल दिया गया है। आवश्यकतानुसार सोशल मीडिया के विशेषज्ञों के साक्षत्कार भी लिये गये हैं। समाज का वह वर्ग जो कि सोशल मीडिया से किसी ना किसी प्रकार से सदैव जुड़ा हुआ है, के भी विचारों और उनके अनुभवों को इस अध्ययन में संग्रहित किया गया है।

शोध परिणाम

सामाजिक विकास में सोशल मीडिया की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। अध्ययन के दौरान प्राप्त विवरणों में बहुतायत संख्या में लोगों ने सोशल मीडिया की सराहना की है। छात्र वर्ग का मानना है कि इन सामाजिक माध्यमों के उपयोग से उन्हें अध्ययन, शोध और रोजगार प्राप्त करने मे बहुत ही मदद मिलती है। सरकारी नीतियों और सामाजिक कल्याण संबंधी योजनाओं के बारे में सोशल माध्यमों के सहयोग से समय रहते पर्याप्त जानकारी उपलब्ध होने के कारण समाज के सर्वांगीण विकास की राह आसान हो गयी है। दूरस्थ क्षेत्रों में सामाजिक माध्यमों की उपलब्धता हालाकि अपेक्षित नहीं है लेकिन वहॉ के लोग भी इन माध्यमों की विशेषता को बखूबी समझते हैं। अध्ययन की महत्वपूर्ण प्राप्तियॉ निम्नवत् हैं-

- लगभग 67 प्रतिशत उत्तरदाता सामाजिक विकास को सोशल मीडिया की देन मानते हैं।
- 86 प्रतिशत लोग स्वयं या दोस्तों के मोबाईल या लैपटाप के माध्यम से सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं।
- सोशल मीडिया से जुड़े हुये 73 प्रतिशत शिक्षार्थी सामाजिक विकास से सम्बंधित सूचनाओं को अपने दोस्तों के साथ साझा करते हैं।
- 74 प्रतिशत लोग प्रतिदिन 4-5 घण्टे सामाजिक माध्यमों का उपयोग करते है।
- 83 प्रतिशत लोगो का कहना है कि शिक्षा में सुधार सामाजिक विकास को बढ़ावा देता है और सोशल मीडिया के उपयोग से शिक्षा में काफी बदलाव आया है।
- 12 प्रतिशत लोग सामाजिक माध्यमों के दुरूपयोग से चिंचित है जो युवा वर्ग को असामाजिकता की ओर प्रोत्साहित कर रहा है।
- युवाओं के बीच प्रत्यक्ष रूप आपस में घटती संवादशीलता समाज में चिंता का विषय है।
- 27 प्रतिशत विद्यार्थी गॉव से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन को रोकना चाहते है वहीं 15 प्रतिशत अभिभावक गावों की सुविधाओं पर्याप्त बताते हैं।
- सोशल मीडिया के विशेषज्ञों का कहना है कि आने वाले समय में इन माध्यमों का और भी अधिक विकास होगा जो कि समाज के सर्वांगीण विकास में सहायक होंगें।

निष्कर्ष

सामाजिक माध्यमों की पहुॅच आज समाज के हरेक पहलुओं पर अपना अपेक्षिक प्रभाव छोड़ता नजर आ रहा है। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जहॉ सोशल मीडिया की जरूरत नहीं हो। इन जरूरतों को हम किन शब्दों में व्यक्त करें क्योंकि यह कहना मुमकिन नहीं होगा कि आज के समय में सोशल मीडिया के बगैर समाज में मूलभूत व्यवस्थाओं का संचालन मुश्किल हो सकता है। क्षेत्रीय विकास, सामाजिक विकास के साथ देश के सर्वांगिण विकास की परिकल्पना आज सोशल माध्यमों के अभाव में अधूरी पड़ सकती है। शिक्षा का क्षेत्र हो या विज्ञान, गणित या वैज्ञानिक शोध, राजनीति या देश संचालन के लिये बनने वाली नीतियॉ, उद्योग जगत से जुड़ी नीतियॉ और उनके व्यापार संचालन के तौर तरीके, हर जगह सामाजिक माध्यमों का जबरदस्त उपयोग हो रहा है।

संदर्भ

1. https://econsultancy.com/blog/3527-what-is-social-media-here-are-34-definitions/
2. http://smallbiztrends.com/2013/05/the-complete-history-of-social-media-infographic.html

3. http://www.business2community.com/social-media/impact-social-media-truly-society-0974685
4. http://www.cyberorient.net/article.do?articleId=7439 an research paper written by Mohammed El-Nawawy and Sahar Khamis " Poloitical Activism 2.0: Comparing the role of social media in Egypt's"Facebook Revolution" and in Iran "Twiter uprising""
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Social_media
6. http://smallbiztrends.com/2013/05/the-complete-history-of-social-media-infographic.html
7. http://smallbiztrends.com/2013/05/the-complete-history-of-social-media-infographic.html
8. https://en.wikipedia.org/wiki/Global_village_%28term%29
9. http://www.youthkiawaaz.com/2014/05/big-role-socialmedia-played-lok-sabha-election-brief-look/ an published article "How big a role of Social Media played in this Lok Sabha election, A brief look"